# 2.4 वन प्रबन्धन

## 2.4.1 विहंगावलोकन

धारणीय आधार पर वन प्रबन्धन का सुधार करना महत्वपूर्ण वन नीति लक्ष्यों में से एक है। वन संसाधनों के धारणीय उपयोग के लिए यह आवश्यक है कि वनीकृत भूमियों से कुल ऊपज को साथ-साथ अधिकतम करते हुए वनों की क्षमता उत्पादकता की रक्षा की जाए। एक उत्पादन कार्यात्मकता की कल्पना करने के लिए मापन योग्य वन लक्षणों यथा - आयु, स्थल, घनता तथा वृद्धि के सभी प्रासंगिक संयोजनों के लिए वन प्रबन्धन को ऊपज के रुप में सामाजिक-आर्थिक लाभों के सही प्राक्कलन की आवश्यकता है। ये प्राक्कलन ईष्टतम चक्रीकरण, रोपण घनता, निराई कार्यक्रम तथा उपचार रिजाइम पर बुद्धिमतापूर्ण प्रबन्धन निणर्यों के लिए कठिन है। वनों से अत्यधिक निष्कासन उत्पादकता भण्डार को खत्म कर सकता है तथा बहुत कम उपयोग संसाधनों का अपर्याप्त उपयोग होगा क्योंकि उत्पादकताक्षमता का पूर्ण रुप से उपयोग नहीं किया जाता है तथा समाज तत्काल मिलने वाले लाभों से वंचित रहता है। इस प्रकार की सूचना वन संवर्धनीय तथा पर्यावरण प्रबन्धन के लिए भी वांछित है तथा अत: यह काफी समय से भा.वा.अ.शि.प. द्वारा पैदा की गई है। इस कार्य को देश की अधिक प्रजातियों तथा क्षेत्र को कवर करने के लिए विस्तारित किया गया है। वन सीमांत क्षेत्रों की वन प्रबन्धन योजना इस उददे्श्य के साथ विकसित की गई है ताकि स्थानीय सामाजिक आर्थिक तथा पारिस्थितिक आवश्यकताओं के साथ अनुरूपता के लिए इन क्षेत्रों के प्रबन्धन के लिए और अधिक अच्छे उपकरण उपलब्ध करवाये जा सके। संयुक्त वन प्रबन्धन तथा वन्य जीव क्षेत्रों की सूक्ष्म योजना बनाने के लिए विशिष्ट दिशानिर्देश देने के लिए राष्ट्रीय कार्ययोजना कोड को संशोधित तथा उन्नत किया गया है। संशोधित राष्ट्रीय कार्य योजना कोड के लिए ड्राफ्ट रिपोर्ट, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार को प्रस्तुत कर दी गई है।

काष्ठ नक्काशी उद्योग में निर्यात के लिए अत्याधिक क्षमता है। इस उद्योग के रास्ते में आने वाली बाधाओं को निराकरण के उद्देश्य के साथ निरीक्षित किया गया है। वन उत्पादों की मांग, आपूर्ति तथा बाजार बुद्धिमता सूचना तंत्र की आवश्यकता को पहचाना गया है तथा इसे क्रेताओं, विक्रेताओं तथा उपभोक्ताओं तक पहुँचाने के लिए भा.वा.अ.शि.प. द्वारा प्रभावी कदम उठाए गए है। कृषि तथा वानिकी सैक्टर के सफल विपणन मॉडलों को वानिकी में उनके वृहद अनुप्रयोग के लिए विश्लेषित किया गया है। विभिन्न पादपों, कीटों तथा रोगों पर इंटरनेट आधारित सूचना उपलब्ध करवाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए तीव्र कदम उठाए गए हैं।

**विषय के अर्न्तगत परियोजनाए**

| परियोजनाएं | पूर्ण की गई परियोजनाएं | जारी परियोजनाएं | वर्ष के दौरान नयी आरम्भ की गई परियोजनाएं |
|---|---|---|---|
| प्लान | 03 | 10 | 04 |
| बाह्य सहायता प्राप्त | 00 | 07 | 01 |
| **कुल** | **03** | **17** | **05** |

## 2.4.2 धारणीय वन प्रबन्धन

असोला भट्टी वन्य जीव अभयारण्य, नई दिल्ली के लिए प्रबन्धन योजना की तैयारी के लक्ष्य को देखते हुए मृदा तथा वानस्पतिक सर्वेक्षण किये गये है।

पादपीय नाशीकीटों के पर्याक्रमण पैटर्न को समझने के लिए गणितीय मॉडल विकसित किये गये है। मॉडल असत्त पीढ़ी के चक्र के विनिमय में प्रोटेन्डरी जैसे कारकों की एक अलग संभावना का सुझाव देते हैं।

वन सीमांत ग्रामों की पहचान तथा उनके सामाजिक-आर्थिक तथा पारिस्थितिक की पहचान की प्रक्रिया के लिए सर्वेक्षण प्रारम्भ किये गये है जो कि पूर्ण होने पर भारत के 275 दलदली जिलों को कवर करेगा। असम के जोरहाट, सोनितपुर तथा दारंग जिलों के 67 ग्रामों का सामाजिक-आर्थिक तथा 7 ग्रामों का पारिस्थितिक सर्वेक्षण पूरा किया गया है। सर्वेक्षण किये गये ग्रामों के लिए जी.पी.एस. आकड़ें अभिलिखित किये गये हैं।

### 2.4.3 वन अर्थशास्त्र

बांस संसाधनों की मांग, आपूर्ति तथा विपणन बुद्धिमता पर आकडें अभिलिखित किये गये तथा उत्तर भारत के चार राज्यों/केन्द्र शासित राज्यों में विश्लेषित किये गये।

चीड पाईन के गैर–प्रकाष्ठ वन उत्पादों पर सरकारी निकायों तथा वन निवासियों से आकड़ें एकत्रित किये गये। कृषि तथा वानिकी सैक्टरों में सफल विपणन रणनीतियों तथा राज्य वन विभागों, गैर–सरकारी संगठनों, किसानों सहकारी समितियों के विवरण चैनलों पर अध्ययन किये गये।

नक्काशीदार काष्ठ उत्पादों के निर्यात में आने वाली समस्याओं तथा आजीविका तथा पारिस्थितिक पर प्रभाव पर सूचना उत्पन्न करने के लिए उत्तर भारत में दस काष्ठ नक्काशी केन्द्र चयनित किये गये है। सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकीय आकडे एकत्रित किये गये है।

हरियाणा, पंजाब तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में *एलन्थस एक्सेलसा* तथा *मेलिया* प्रजाति के विपणन तंत्र को समझने के लिए प्रश्नावली का विकास तथा परीक्षण किया गया।

चयनित व्यापारिक प्रकाष्ठ प्रजातियों तथा बांस के मूल्यों पर सूचना राष्ट्रीय आधार पर चयनित बाजारों तथा वन विभागों/निगमों से एकत्रित की गई। एकत्रित सूचना को प्रकाष्ठ तथा बांस ट्रेड बुलेटिन के रुप में प्रकाशित किया गया।

### 2.4.4 वन जीव साख्यिकी

राजस्थान के आई.जी.एन.पी. क्षेत्र में *प्रोसोपिस सिनरेरिया* तथा *एलन्थस एक्सेलसा* के लिए चौदह नमूना भू–खण्ड बनाए गए। उत्पादकता तथा जैव सांख्यिकी अध्ययनों के लिए वृक्षों का मापन किया गया।

गुजरात राज्य में सागौन के सोलह स्थाई नमूना भू–खण्ड बनाए गए तथा सम्बन्धित राज्य वन विभाग से पातन के लिए अनुमति मांगी गई।

कर्नाटक के सागौन रोपणों में 27 नमूना भू–खण्ड बनाए गए।

### 2.4.5 नीति तथा वैधानिक मामले

'संयुक्त वन प्रबन्धन क्षेत्रों के लिए सूक्षम योजना प्रक्रिया' तथा 'वन्य जीवन क्षेत्रों के लिए पारि–विकास की सूक्ष्म योजना' पर परिशिष्ट के साथ संशोधित राष्ट्रीय कार्य योजना कोड का प्रारुप प्रतिवेदन, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय भारत सरकार को प्रस्तुत किया गया है। कार्यशाला–सह–बैठक आयोजित की गई तथा सहभागियों से प्राप्त सुझावों को प्रारुप कार्य योजना कोड में सम्मिलित किया गया था।

### 2.4.6 सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी

सुदूर संवेदी तथा जी.आई.एस. तकनीकों का प्रयोग करके देवदार ( *सीड्रस देवदारा)* तथा कैल ( *पाइनस वैलिचियाना)* सूचना तंत्र विकास की उन्नत अवस्था में है। पाठ्य सामग्री का क्रमवीक्षण तथा सम्पादन किया जा चुका है। सभी रेखाचित्रों, आकृतियों तथा चित्रों की जांच तथा सम्पादन पूरा है। उत्तराखण्ड राज्य के देवदार तथा कैल मानचित्रों को तैयार किया जा चुका है तथा स्थलीय प्रमाणिकता के आधार पर सत्यापित किये गये है। हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू तथा कश्मीर के मानचित्र विकसित किये गये है।

छोटानागपुर क्षेत्र में लाख होस्ट बैल्ट की पहचान तथा अनुश्रवण के लिए जी.आई.एस/आर.एस. आधारित तंत्र के विकास के लिए सर्वेक्षण पूरे किये जा चुके है तथा स्थलीय प्रमाणिकता की गई है।

वन वृक्ष प्रजातियों के कीटों तथा उनके प्रबन्धन के लिए एक सूचना तंत्र विकसित किया गया है। *शोरिया रोबुस्टा, डैल्बर्जीया सिस्सू, डैल्बर्जिया लैटीफोलिया, अकेशिया कटैचू, अकेशिया निलोटिका, एल्बीजिया लिबेक, एलन्थस एक्सेलसा,* बांस, *टैक्टोना ग्रैन्डिस, ब्यूटिया मोनोस्पर्मा* के साथ सम्बन्धित कीटों तथा रोगों के लिए आकडें एकत्रित किये गये। कीटों के लिए सूचना वर्गीकी विस्तृत गुणों, नुक्सान की प्रकृति, हास्ट रेंज, प्राकृतिक शत्रु तथा नियंत्रण उपायों पर एकत्रित की गई। रोगों के लिए, बीज, पौधशाला रोपण, प्राकृतिक वन तथा काष्ठ रोगों, रोगकारकों के प्रकार तथा सुधार उपायों पर आंकडे एकत्रित किए गऐ।

शुष्क तथा अर्धशुष्क क्षेत्रों की वृक्ष तथा झाड़ी प्रजातियों पर वृहद सूचना उपलब्ध करवाने के लिए वानिकी अनुसन्धान विस्तार के लिए एक बैव पोर्टल की रचना की गई है। प्रासंगिक आंकड़े तथा चित्र एकत्रित किये गये है।

चन्दन की लकड़ी के सूचना तंत्र के विकास के लिए आंकड़ा संग्रहण प्रगति पर है। आवश्यक उपकरणों का क्रय किया गया है तथा आंकड़ा आधार के स्थल को अन्तिम रुप प्रदान किया जा चुका है।

दक्षिण भारत की 100 से अधिक व्यापारिक प्रकाष्ठ प्रजातियों के लिए वैब आंकडा आधार डिजाइन किया गया है। बाजार मूल्य तथा आपूर्ति रुट के बारे में सूचना आंकडा आधार में सम्मिलित की गई है।

आंकड़ा आधार के विकास के लिए तमिलनाडू तथा केरल में तीव्र वृद्धि वृक्ष प्रजातियों पर सूचना के संग्रहण के लिए प्रपत्र को अन्तिम रुप प्रदान किया जा चुका है।

विभिन्न संस्थाओं यथा- सी.आई.एफ.ओ.आर., आई.सी.आर.ए.एफ, आई.सी.आर.आई.ए.टी., सिसकों, आदि में ब्लॉग, विक्कीस, सामाजिक नेटवर्किंग हब (फेस बुक, माई स्पेस) वेब-आधारित संचार मोड (चैटिंग, चैट ग्रुप), विशेष रुचि समूह, फोटो-शेयरिंग, विडियो कास्टिंग एण्ड शेयरिंग, ओडियो शेयररिंग, मैशअप, विडगैटस, वर्चुअल वर्ल्डस, माइक्रो ब्लाग (जैसे टिवटर) वाली सफल सूचना प्रौद्योगिकी पूर्ण विपणन रणनीतियों पर अध्ययन किया है।

विभिन्न संस्थाओं यथा-सी.आई.एफ.ओ.आर., आई.सी.आर.ए.एफ., आई.सी.आर.आई.टी., सिसकों आदि में सफल प्रौद्योगिकी वाली विपणन रणनीतियों ब्लॉग, विक्कीस, सामाजिक नेटवर्किंग हब (फेस बुक, माई स्पेस) वेब-आधारित संचार मोड़ (चैटिंग चैट ग्रुप), विशेष रूचि समूह, फोटो-शेयरिंग, विडियो कास्टिंग एण्ड शेयरिंग, ओडियो शेयरसिंग, मैशअप, विडगैटस, वर्चुअल वर्ल्डस, माइक्रो ब्लॉग (जैसे टिवटर) पर अध्ययन किया गया है।

*एल्बीजिया लिबैक* (शिरीष) में पुष्पण

पुष्पण अधीन *टैकोमेला अन्डुलाटा* (रोहिडा)

*ब्यूटिया मोनोस्पर्मा* (पलाश) के पुष्प

*ब्यूटिया मोनोस्पर्मा* (पलाश) का पुष्पित वृक्ष

*एजाडिरैक्टा इंडिका* (नीम) में पुष्पण

*काईगिलिया पिन्नाटा* (बालम खीरा) के फूल

वेब पोर्टल के लिए उपयोग की गई कुछ प्रतिनिधि वृक्ष प्रजातियाँ